पूज्य लालचंदभाई का प्रवचन
अभिनंदन, भिंड शिविर
तारीख ८ अप्रैल १९८९, प्रवचन LA २६९

बाबूजी युगल किशोर जी:- हमारे विशिष्ट अतिथि महोदय माननीय श्री कमिश्नर साहब, हमारे सम्माननीय अतिथि श्री जिलाधीश महोदय, मंच पर विराजमान हमारे विद्वतगण एवं विशिष्ट सज्जनों, माताओं एवं बहनों।

भिंड का ये लोकोत्तर अनुष्ठान आज समापन के बिन्दु पर है। कोई चाहता तो नहीं है कि ऐसे अनुष्ठान का समापन हो और आशा भी ऐसी ही की जाती है कि भले ही इस रूप में इसका समापन हो जाए लेकिन आप इसका कभी समापन नहीं करेंगे - ऐसा विश्वास लेकर आदरणीय श्री लालचंदभाई आपसे विदा लेंगे।

यह एक सुयोग ही समझिये भिंड का कि शिकोहाबाद से विहार करता-करता ये शिविर भिंड में आ गया। मुझे ऐसा लगा कि अनायास ही भिंड की एक अकल्पित लॉटरी खुल गई।

आदरणीय श्री लालचंदभाई को बहुत लोगों ने पहले देखा भी नहीं था, सुना भी नहीं था और जो सुना था वह उन्होंने स्वयं आपको बताया है कि क्या सुना था। कि वे जो बोलेंगे उसे लोग समझ नहीं पायेंगे - ऐसा सुना था। लेकिन यहाँ पाया यह गया कि वे जो बोले उसको सबके सब लोग पी गए और फिर भी प्यासे रहे।

सचमुच लालचंदभाई हमारे इस वर्तमान अध्यात्म-युग के श्रेष्ठ व्यक्तित्व हैं। मैं तो इस बात को अकेले में भी सोचता हूँ कि पूज्य गुरुदेव हमारे बीच से चले गए जैसे अनायास ही चले गए। किसी को ये आशा नहीं थी, किसी का मन भी यह नहीं करता था कि गुरुदेव चले जाएँ; लेकिन वे चले गए। और यह एक समस्या सी बन गई थी कि अब गुरुदेव की जो वाणी है और उस वाणी का जो हार्द है, उसका जो मर्म है, वो हमें कैसे मिलेगा? लेकिन मुझे लगता है कि भारत का भाग्य सिर्फ लालचंदभाई के रूप में बच गया! और पूज्य गुरुदेव सिर्फ लालचंदभाई के पास सुरक्षित रह गए। आज अध्यात्म के नाम पर सुनते तो हम बहुत हैं। आपने भी बहुत सुना होगा और बहुत सुनेंगे आप। लेकिन अभी इस एक सप्ताह में आपने जो सुना है, उसमें सभी लोगों ने यह अनुभव किया है कि यह जो सुना है वह हमने पहले कभी नहीं सुना (था)। सचमुच गुरुदेव का हार्द यही था, उनका हृदय यही था। और उन्होंने आगम के सागर को अपनी स्वयंबुद्धता से मथकर जो मोती निकाले थे, जो रत्न निकाले थे, आज सचमुच यदि लालचंदभाई नहीं होते तो मैं आपको सत्य कहता हूँ कि वे मोती हमको उपलब्ध नहीं होते।

अध्यात्म की बात करना कोई एक बात है, लेकिन सचमुच अध्यात्म तो एक लोकोत्तर पथ है। और उस लोकोत्तर पथ का जो गंतव्य है, मुक्ति (वह) कैसे उपलब्ध होती है, उसकी कला क्या है - वह

किसी विरल व्यक्ति के पास होती है। आज का जो युग है, वो तो आप देखते हैं - अत्यंत निकृष्ट है। स्वयं तत्त्वज्ञान की बात करनेवाले भी एक मत नहीं हो पाते। लेकिन यह जो लोकोत्तर पथ है और उसका जो मर्म है, यदि सचमुच वो हमारे हृदय में प्रविष्ट हो जाता है, स्थापित हो जाता है तो इसमें संदेह नहीं कि एक नहीं वो अनंत पूरे कर देता है। उसमें इतनी ताकत है।

ये ऐसा व्यक्तित्व है लालचंदभाई के रूप में कि यदि इस समय हम उनको थोड़े समय के लिए गौण करके देखते हैं - तो ऐसा लगता है कि गुरुदेव के अध्यात्म को कहनेवाला जैसे कोई नहीं है - ऐसा लगता है। आवश्यकता इस बात की है कि आज अपने भीतर संचित जिन निधानों को वे हमें लुटा रहे हैं, हम जितना लूट सकें लूट लें।

शिविर हुआ है, भिंड का। मैं तो आपको कहना चाहता हूँ कि सचमुच लालचंदभाई के इस विस्मयात्मक पदार्पण से भिंड में एक जैनदर्शन भवन का शिलान्यास हुआ है और उस भवन की नींव के दो पत्थर उन्होंने स्थापित किये हैं, रखे हैं, उस शिलान्यास में; पहला ये कि **आत्मा अकर्ता है** और दूसरा ये कि **आत्मा पर को जानता नहीं।**

अब इस भवन के शिलान्यास के बाद इसका बहुत बड़ा उत्तरदायित्व हमारे ऊपर आ पड़ा है और हम हर कीमत पर, अपने हर प्रयत्न से उस भवन को पूरा कर पाएँ - ऐसी शक्ति हमें लालचंदभाई से मिले, ऐसी शक्ति उनके द्वारा बताए (हुए) उस ज्ञायक से हमें मिले, ये भावना हमारी निरंतर रहे। सचमुच उन्हें दोबारा यदि हम बुलाना चाहते हैं तो इस भवन को हम तैयार कर लें। और उनकी सबसे बड़ी, उनके प्रति जो सबसे बड़ा सम्मान है, वह केवल यही है कि उनकी वाणी, उनकी अजस्र वाग्धारा वो हमारे भीतर सुरक्षित हो जाये, उस पर हमारा अधिकार हो जाए और वह हमारे जीवन के लिए एक मंगलदायिनी औषधि बन जाए।

सारा ही भिंड समाज कितना पुलकित था, कितना प्रसन्न था, यह एक सबसे बड़ी विशेषता थी। शिविर तो होते हैं और हम देखते भी हैं, पर यहाँ की एक सबसे बड़ी विशेषता ये देखी थी कि आबाल-वृद्ध सारा महिला समाज, सारा पुरुष समाज जब उठता था वो सुनकर तो वह प्रसन्न-वदन नजर आता था। इसका अर्थ यह है कि उनको लगता था कि कुछ ऐसा मिला है, जो पहले कभी नहीं मिला। ये उसका परिचायक है।

हम, आप सभी मिलकर सम्मान करते हैं उस महान व्यक्तित्व का और हम तो ये भावना करते हैं, ये आग्रह करते हैं हमारे भीतर कि वे हमारे बीच ही रहें और उनका निर्वाण न हो। उनका निर्वाण तो उनके लिए सुखद होगा, लेकिन हमारी भावना की सफलता ये है कि वे हमारे बीच रहकर सदैव पूज्य गुरुदेव के इस तत्त्व का, तीर्थंकरों के इस तत्त्व का उद्घोष इस भारतवर्ष के बीच में, बल्कि इस भारत के बाहर भी ये तत्त्व पहुँचे - ऐसी मंगल कामना हम करें और यही उनका सबसे बड़ा अभिनंदन होगा। जो तत्त्व उन्होंने दिया है उसका आप पालन-पोषण करें, उसको आप परिपुष्ट करें - आप और हम सभी, मैं भी कोई न्यारा नहीं हूँ। सभी हम उसको परिपुष्ट करें और उसके द्वारा हम अपना कल्याण करें और समाज को भी खुलकर वो तत्त्व हम दें तो सच में समाज भी बहुत उपकृत होगा। मैं पुनः पुनः इस महान व्यक्तित्व के प्रति अपनी श्रद्धांजलियाँ समर्पित करता हूँ।

[Time: 19 minutes 44 seconds]

पूज्य श्री लालचंदभाई:- मंगलाचरण

ये आप लोग सब मेरा सम्मान करवा रहे हैं.... गुजराती भाषा है मेरी। आप सब लोग जो मेरा सम्मान कर रहे हैं, वो सब का सब सम्मान मैं गुरुदेव के चरणों में समर्पित करता हूँ। ये सब उनकी देन है। जो कुछ मैंने जाना और जानकर कहा वो सब परम उपकारी पूज्य गुरुदेव श्री की ही देन है, हमारा कुछ माल नहीं है। हम तो उनके प्रतिनिधि (agent) हैं, transfer (स्थानांतरण) करता हूँ। वो जो कहते हैं उसको मैं transfer कर देता हूँ।

मुमुक्षु:- बोलो कहान गुरुदेव की जय हो!

पूज्य श्री लालचंदभाई:- ये गुरुदेव हैं, विराजमान ऊपर। आहाहा!

मूल बात ये है, प्रयोजनभूत बात ये है.... सबके लिए है, जीव मात्र के लिए है कि आत्मा का स्वभाव है ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव जानना है। यहाँ तक सबके पास ज्ञान तो आ गया। जानना तो करते हैं सब, जानना-जानना-जानना मगर ज्ञान का दुरुपयोग करते हैं। ज्ञान का सदुपयोग दुख के नाश का उपाय है, सुख का उपाय है - आत्मिक सुख का उपाय है। और ज्ञान का जो दुरुपयोग करता है वो दुख का कारण है। ज्ञान का दुरुपयोग क्या? कि आत्मा का स्वभाव ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना था, वो भूलकर अपने ज्ञान से पर को जानते-जानते.... वो जानने से ममत्व (अर्थात्) मोह-राग और द्वेष सारा संसार खड़ा हो जाता है। उससे व्यावृत्त होकर जो ज्ञान जिसका है, आत्मा का है उस ज्ञान के द्वारा अपने आत्मा को जानने से, अनुभव करने से, आत्मिक अतीन्द्रिय आनंद की अभी (ही) प्राप्ति हो जाती है और बढ़कर पूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है। तो ज्ञान का सदुपयोग करना, दुरुपयोग करना बंद कर देना। दुरुपयोग यानि पर को जानना वो दुरुपयोग है; वो सदुपयोग नहीं है। और दुरुपयोग से दुख ही दुख आता है, मोह-राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ, ऐसे सारा संसार उत्पन्न हो जाता है।

इसलिए आत्मा का स्वभाव ज्ञान और ज्ञान का स्वभाव आत्मा को जानना। मात्र आत्मा को जानना, ऐसे जानने से भव का अंत आ जाता है और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।